Semester - I MJC

Meaning and Definitions of Emotion

संवेग के बिना जीवन नीरस होता है। व्यक्ति को परिस्थिति के प्रति अनुक्रिया करने की अभिप्रेरणा भी संवेग द्वारा प्राप्त होती है। सभी के अनुभव की बात है। कि संवेगात्मक अवस्था में शक्ति संचालन (mobilization) होने लग जाता है। क्रोध या उत्साह आने पर मनुष्य ऐसे साहसिक कार्य कर बैठता है। जो सामान्य मानसिक दशा में कभी नहीं कर सकता। प्रेम की संवेगात्मक अवस्था में व्यक्ति प्रेमपात्र के लिए इतने महान त्याग कर गुजरता है। जिनको वह साधारण दशा में कभी नहीं कर सकता। संवेग में कोई बाप से बालकों के लिए बड़े से बड़े त्याग कर जाता है।

लेकिन कोई समूह के लिए अपनी बुद्धि पर से नियंत्रण खो देते हैं, नियंत्रण खो देने के कारण व्यक्ति कुछ उचित काम करता है। तो कुछ अनुचित काम करता है। क्रोध आने पर व्यक्ति अनुचित काम कर बैठता है। संवेगावस्था अत्यधिक प्रबल होने पर व्यक्ति की दशा पागल जैसी हो जाती है। उस समय उसे अच्छे-बुरे का ज्ञान नहीं होता, जिससे वह कुत्सित काम भी उसी तरह कर सकता है। जिस तरह अच्छा काम कर सकता है। मानव चाहे कुछ संवेगों के वेगों से आसानी तक पहुँचता है। संवेगों के कारण वह पशु के स्तर पर पहुँच जाता है।

संवेग शब्द का अंग्रेजी रूपान्तरण इमोशन (Emotion) है। संवेग मनुष्य को हिला देता या उत्तेजित कर देता है। संवेग मनुष्य को झकझोर देता है। उसकी भृकुटियाँ खिंच जाती हैं। दाँत किटकिटाने लगते हैं। माथे पर सलवटें पड़ जाती हैं। उसका पूरा शरीर उत्तेजित-सा प्रतीत होता है। संवेग मनुष्य को हिलाकर रख देता है।

Teacher's Signature: [signature] 09/10/25

मनुष्य का संतुलन संवेग की अवस्था में बिगड़ जाता है। जिस कारण व्यक्ति की बुद्धि उचित प्रकार से कार्य नहीं कर पाती। संवेग मनुष्य जीवन में रंगीनियाँ लाता है। दूसरी ओर व्यक्ति को संवेग से उद्दीप्त करने में अभिप्रेरणा भी मिलती है। युवक अपना भविष्य स्वप्न देखते हैं तो बहुत-से युवक प्रेम की ओर अभिप्रेरणा से उन्नति का विचार प्रबल कर लेते हैं। ठण्डे दिमाग से जो कार्य किया जाता है उसमें भारी भूल होने का भय बहुत कम होता है। संवेग जीव की शक्ति की उत्पत्ति करते हैं और आपात काल में उसकी बड़ी सहायता करते हैं।

संवेग सम्पूर्ण व्यक्ति में तीव्र उपद्रव की अवस्था है जिसकी उत्पत्ति मनोवैज्ञानिक कारणों से होती है जिसमें व्यवहार, चेतन अनुभव तथा अंतरावयवीय कार्य सम्मिलित रहते हैं।

प्रत्येक संवेग एक अनुभूति होती है तथा प्रत्येक संवेग उसी समय एक गत्यात्मक तत्परता (motor set) होता है।

संवेग जीव की एक उत्तेजित अवस्था है जिसमें श्वास लेना, नाड़ी गति, हृदय की गति इत्यादि व्यापक शारीरिक परिवर्तन तथा मानसिक दशा में तीव्र अनुभूति के साथ उत्तेजना अथवा अवस्था एक निश्चित प्रकार का व्यवहार करने की साधारण प्रवृत्ति देखी जाती है।

संवेग में पाँच तत्व पाये जाते हैं।
परिस्थिति का उत्पन्न होना, परिस्थिति का प्रत्यक्षीकरण, संवेदन एवं अनुभव, संवेगात्मक व्यवहार, उत्तेजित होना,

Teacher's Signature: Pkr 09/10/25